कई लोग सांसारिक वस्तुओं और संबंधों के लिए भगवान की प्रार्थना करते हैं। अपनी मांग भगवान के सामन रखते है। - मुझे एक बच्चा दे दो। किसी ऐसे व्यक्ति को बचाओ जो मर रहा हो। मुझे पैसे दो। मुझे शक्ति दो। मेरी समस्या हल करें। मेरी पीड़ा मिटा दो। मेरा बिझीनेस चलवा दो। मेरी पिक्चर हिट करवा दो। और इसी तरह अनेक मांग करते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह बिल्कुल भक्ति नहीं है। भक्ति का मतलब भगवान से प्रेम। ऐसे मामलों में प्रेम तो उन संसारी वस्तु या व्यक्तिओं के लिए है जो मांगी जाती है और भगवान सांसारिक इच्छा को पूरा करने के लिए सिर्फ एक साधन बन जाता है। जब इच्छा पूरी होती है ते विश्वास बढ़ता है और जब इच्छा पूरी नही होती है तो विश्वास कम हो जाता है। भगवान को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। भगवान किसी के लिए कर्म के परिणामों में हेरफेर नहीं करता। हिंदू कहता है 'कोई भी अपने कर्म के परिणाम से बच नहीं सकता।' यह भगवान का कानून है और वह अपना कानून किसी के लिए नहीं तोड़ता। कानून तोडने के लिए भगवान से मन्नत मांगने वाले यानी भगवान को घूस देकर अपना संसारी काम कराने की आशा रखने वाले तो घोर मूर्ख कालिदास से भी अधिक मूर्ख है।

लेकिन हमें सदा के लिए सभी पीड़ाओं से छुटकारा पाने के लिए भगवान से प्यार करने की जरूरत है और तब अंतःकरण की शुद्धि पर भगवान के शरणागत होने पर आपकी सब समस्याएँ समाप्त होगी।

यदि आप भगवान से कुछ सांसारिक मांग करते हैं, तो भी आप उसे केवल तभी प्राप्त करेंगे जब वह आपके

प्रारब्ध में हो। लेकिन आपको धोखा होगा कि भगवान ने मेरी सुन ली। यदि प्रारब्ध में नही होगा तो इच्छापूर्ति नही होगी। फिर आप कहोगे, अरे! भगवान वगैरा कुछ नही होता और आप नास्तिक बन जाओगे। प्रारब्ध के विपरीत किसी को कुछ नही मिलता। इसीलिए कुछ इच्छा पूरी होती है और कुछ नही होती।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

जो लोग सही सिद्धांत से अवगत नहीं हैं वे नकली संतों से आसानी से फंस सकते हैं जो सभी प्रकार की सांसारिक वस्तुओं का वादा करते हैं। सभी को कहेंगे - तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। सौ लोगों में से कुछ लोगों की इच्छा उनके प्रारब्ध के अनुसार पूरी होगी। वे लोग उस दम्भी का गुन गाने लगेंगे। फिर क्या है? उसकी दुकान चलने लगी। अब लोगों को ठगने का काम और जोर शोर से चलेगा। लोग ऐसे पाखण्डियों के चक्कर में क्यूं आते हैं? क्या वो ये नही जानते कि भगवान राम ने अपने पिता दशरथ तक को नहीं बचाया था?

एक बात और है कि भगवान हर जगह मौजूद है। प्रसिद्ध मंदिरों के स्थानों पर जाने की क्या आवश्यकता है? वही भगवान पास के मंदिर में मौजूद है। वही भगवान आपके दिल में मौजूद है। यदि आप इसे विश्वास नहीं करते हैं, तो आपको भगवान में कोई विश्वास नहीं है। हिंदू कहता हैं, 'जब मैं(भगवान) तुम्हारे दिल में वही रहता हूं तो तुम मुझे बाहर क्यों खोजते हो?' आपके घर पर कामधेनु (गाय जो आपकी सभी इच्छाओं को पूरा करती है) है और आप बाहर भोजन के लिए भीख मांग रहे हैं! न केवल मंदिर, मस्जिद बल्कि लोग (बड़े राजनेताओं और प्रसिद्ध हस्तियों सहित) कबरीस्तान में भी आशा पूर्ति हेतु जाते हैं जहां किसी को सालों पहले दफनाया गया

था। कितनी बड़ी मूर्खता है!

हमें सही सिद्धांत याद रखना चाहिए 'कोई भी अपनी कर्म के फलों के अलावा कुछ और नहीं प्राप्त कर सकता। कोई भी कर्म के परिणामों से बच नहीं सकता। 'अवश्यमेव भुक्तव्यम्' कर्मफल भोगना ही पडता है। ईश्वर भक्ति ही एकमात्र मार्ग है! इसे अभी करें या आज करें या इस जीवन में करें या अनंत जीवन के बाद इसे करें! करना पडेगा। 'नान्यः पंथा विद्यते यनाय' कोई अन्य मार्ग नहीं है! जब करना ही है, तो जितनी जल्दी शुरू हो सके उतना बेहतर है। अन्यथा मानसिक एवं शारीरिक मृत्यु आदि दुःखों का कभी अंत नही होगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132